11 / 05 / 77 की अव्यक्त वाणी

पर आधारित योग अनुभूति

सम्पन्न स्वरूप की निशानी -

शुभ चिन्तन और शुभ चिन्तक

➢➢ 'शुभ-चिन्तन और शुभ-चिन्तक'- दोनों लक्षण धारण कर सम्पन्न आत्मा बनना..

➳ _ ➳ अमृतवेले 'मीठे बच्चे, लाडले बच्चे', उठो... ये सुमधुर आवाज सुन मैं आत्मा उठ जाती हूँ...

→ सामने दोनों हाथों को फैलाए बापदादा मुस्कुराते हुए खड़े हैं...

■ मीठे बाबा को मीठी गुड मॉर्निंग कर उनके गले लग जाती हूँ...

➳ _ ➳ प्यारे बाबा अपने प्यार की बरसात कर रहे हैं...

→ 'बालक सो मालिक बच्चे'

→ 'बाप के सिरताज बच्चे'

→ 'सिकीलधे बच्चे'

■ अपनी मीठी वाणी से लाडले बाबा मुझे लाड कर रहे हैं...

➳ _ ➳ अपना वरदानी हाथ मेरे सिर पर रख वरदानों के फूल मुझ पर बरसा रहे हैं...

→ 'गुणवान भव

→ 'मास्टर सर्व शक्तिवान भव'

→ 'समान भव'

■ 'बाप समान भव' जिसमें सर्व वरदान समाए हुए हैं...

▶ वरदानों को पाकर मैं आत्मा भाग्यशाली अनुभव कर रही हूँ...

➳ _ ➳ मैं आत्मा सभी वरदानों को स्वयं में ग्रहण कर रही हूँ...

→ ज्ञान स्वरुप आत्मा बन ज्ञान के खजानों को जमा कर रही हूँ...

→ सम्पूर्ण पवित्रता को ग्रहण कर पवित्र स्वरुप बन रही हूँ...

→ सुख स्वरुप आत्मा होने की अनुभूति कर रही हूँ...

→ शांति की किरणों को ग्रहण कर शांत स्वरुप आत्मा बन रही हूँ...

→ आनंद स्वरुप आत्मा बन आनंद की किरणों को चारों और फैला रही हूँ...

→ मैं प्रेम स्वरुप आत्मा बन रही हूँ...

→ मास्टर सर्वशक्तिवान बन शक्तियों से सुस्सज्जित हो रही हूँ...

➳ _ ➳ अमृतवेले अथाह, अखूट खजानों को पाकर मैं आत्मा शुभ चिन्तन करती हूँ...

→ सत्य ज्ञान, परम ज्ञान का मंथन करती हूँ...

■ ज्ञान के समुन्दर में डूब कर ज्ञान रत्नों को चुग रही हूँ...

- ऐसा ज्ञान जो कल्प में एक ही बार मिलता है...
- जो स्वयं परमात्मा ये ज्ञान सुनाते हैं...
- जो आजतक किसी ने नहीं सुनाया...
- इस ज्ञान से मैं आत्मा आदि, मध्य, अंत को जान गई हूँ...
- अपने 84 जन्मों को जान गई हूँ...
- अपने सत्य स्वरुप को जान त्रिकालदर्शी बन गई हूँ...
  - ▶ मैं आत्मा शुभ चिन्तन से सदा समर्थ संकल्प ही कर रही हूँ...
  - ▶ व्यर्थ और अशुभ चिन्तन स्वतः ही समाप्त हो रहे हैं...

➳ _ ➳ अमृतवेले ही मैं आत्मा अपनी दिनचर्या को सेट करती हूँ...

→ शुभ संकल्पों से अपनी दिनचर्या रूपी सृष्टि का निर्माण करती हूँ...

- मेरे शुभ संकल्पों का प्रभाव सारे दिन पर पड़ रहा है...
- मेरा सारा दिन खुशियों में व्यतीत हो रहा है...
- जिसके दिन का आरम्भ ही भगवान् के मिलन से हो उसका सारा दिन कितना अच्छा होगा...
- कितने ही स्नेह से, समीप से बाबा रोज मुझसे मुलाकात करते हैं...
- अब तो मेरा संकल्प भी बाबा और मेरा संसार भी बाबा है...

➳ _ ➳ मैं आत्मा शुभ चिन्तन कर शुभ चिंतक बन गई हूँ...

→ समर्थ संकल्पों से, शुभ चिन्तन से मैं आत्मा शुभ चिंतक बन गई हूँ..

→ सर्व के प्रति सदा शुभ भावना ही रखती हूँ...

→ सदा विश्व की हर आत्मा के प्रति कल्याण की भावना रखती हूँ...

→ चाहे कैसी भी आत्मा- सतोगुणी हो या तमोगुणी सभी के प्रति शुभ चिंतक बनी रहती हूँ...

→ चाहे अपकारी भी सामने आये उसके ऊपर भी उपकार ही करती हूँ...

→ कभी किसी आत्मा से घृणा नहीं करती हूँ...

→ सदा उन पर रहम ही करती हूँ...

➳ _ ➳ मैं आत्मा सम्पन्न स्वरुप का अनुभव कर रही हूँ...

→ विश्व परिवर्तन के कार्य में बाबा की सहयोगी बन विश्व का कल्याण कर रही हूँ...

→ हर कदम में सदा फालो फादर कर रही हूँ...

→ हर कार्य में बाबा के विशेष सहयोग की अनुभूति कर रही हूँ...

→ सदा सर्व प्राप्ति सम्पन्न, बाप समान अनुभव कर रही हूँ...

→ सर्व प्राप्ति की लहरों में लहरा रही हूँ...